"मोटा अनाज–समृद्ध आहार"

पंत प्रसार संदेश

वर्ष : 18, अंक : 1 (जनवरी–मार्च, 2023)

कुलपति संदेश

कृषि भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ़ है। जहाँ एक ओर देश की आधे से भी अधिक आबादी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जीविका के लिए कृषि पर निर्भर है, वही देश के सकल घरेलू उत्पाद में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है। गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर ने शिक्षा, शोध एवं प्रसार के समन्वित प्रयास से कृषि के आधुनिकीकरण एवं देश में कृषि क्रान्ति लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयाँ एवं कृषि विज्ञान केन्द्र अपने विभिन्न कृषि प्रसार गतिविधियों के माध्यम से उन्नत कृषि तकनीकों को दूरस्थ क्षेत्र के कृषकों तक पहुँचा कर उनके आजीविका सुधार हेतु निरन्तर प्रयासरत हैं। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्राकृतिक खेती एवं "अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष–2023" के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। आज आवश्यकता है कि कृषकों हेतु ऐसी तकनीक विकसित की जाये जिससे उनकी आय में वृद्धि का मार्ग प्रशस्त हो सके व युवा, जो रोजगार की तलाश में अपने घर से दूर शहरों में भटकते हैं, इन तकनीकों को अपनाकर स्वावलम्बी बन सकें।

मुझे यह जानकर हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा "पंत प्रसार संदेश" पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में अनेक कृषकोपयोगी जानकारी, आगामी त्रैमास के समसामयिक कृषि कार्यक्रम आदि समावेशित होते हैं। पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन एवं कृषकों के स्वरोजगार व आय बढ़ाने में मददगार होगी।

लेखकों को शुभकामनाऐं।

(मनमोहन सिंह चौहान)
कुलपति

संदेश

दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों में नवीन विकसित तकनीकी ले जाने की अपार सम्भावनायें हैं। कृषि विश्वविद्यालयों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न कृषि संस्थानों द्वारा देश के अनेक भागों में कृषि आधारित परीक्षण एवं प्रदर्शन का आयोजन किया जाता है। इनसे प्राप्त परिणामों के आधार पर कृषकोपयोगी तकनीक विकसित किये जाते हैं, जो क्षेत्र विशेष के कृषकों के आवश्यकता के अनुरूप एवं कम लागत के होते हैं। इन नवीनतम विकसित कृषि तकनीकों को सुदूर अंतिम पायदान पर बैठे कृषक तक ले जाकर कृषकों की आय में वृद्धि की जा सकती है। इसी क्रम में, छोटे किसानों के लिए कृषि के कुछ व्यवसाय जैसे फल पौध के बीज/पौध उत्पादन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम की खेती व दुग्ध उत्पादन आदि विकल्प हैं, जिसकी जानकारी कृषकों तक पहुँचाने के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के मार्गदर्शन में विभिन्न जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र पूरी लगन से काम कर रहे हैं। मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा "पंत प्रसार संदेश" नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित की जाती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों एवं कृषि आधारित प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु उपयोगी साबित होगी।

(डा. अशोक कुमार सिंह)
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

हर्ष है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तराखण्ड द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र एवं मुख्यालय के प्रसार कार्यों को किसानों के बीच लोकप्रिय बनाने हेतु "पंत प्रसार संदेश" नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

कृषि क्षेत्र में ज्ञान और निर्णय लेने की क्षमता, राह अवधारित करती है कि किस प्रकार उत्पादन कारकों अर्थात मृदा, जल और पूंजी के उपयोग से टिकाऊ और लाभकारी स्वरूप दिया जा सकता है। कृषि विश्वविद्यालय एवं अन्य शोध केन्द्रों द्वारा अनेक तकनीक विकसित किये जाते हैं, जिन्हें कृषकों तक पहुँचाने में बहुत समय लग जाता है। कृषि विज्ञान केन्द्र इन तकनीकों को कृषक समुदायों तक ले जाने में शोध एवं कृषि के बीच एक पुल की भांति काम करते हैं। इन उन्नत तकनीक द्वारा कृषक अपनी आजीविका में कई गुना बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। मुझे आशा है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यकर्त्ता एवं कृषकों हेतु उपयोगी सिद्ध होगी। मैं पत्रिका के जनवरी–मार्च, 2023 अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा इससे जुड़े सभी सम्बन्धितो को बधाई देता हूँ।

(डा. डी.आर. सिंह)
कुलपति
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर (बिहार)

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : जनवरी–मार्च

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : फसल पकने पर यथासमय कटाई व गहाई कर लें।

चना, मटर, मसूर, उर्द एवं मूंग : चना, मटर एवं मसूर की तैयार फसल की कटाई कर लें। विलम्ब से बोयी गयी चने की फसल में फली छेदक कीट का प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार कीटनाशी रसायन का छिड़काव करें।

गन्ना : बसन्तकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें, तथा निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। शरदकालीन गन्ने एवं पेड़ी फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : घाटियों में बोयी गयी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। तैयार फसल की कटाई कर लें। मध्य एवं ऊँचाई वाले क्षेत्रों में असिंचित फसल में 2 प्रतिशत यूरिया का घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।

धान : माह के प्रथम पखवाड़े तक चेतकी धान की बुवाई पूर्ण कर लें। पिछले माह बोयी गयी फसल में जमाव के 20–25 दिन बाद निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें।

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

टमाटर : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। फल छेदक कीट के नियंत्रण हेतु रसायन का प्रयोग करें।

लहसुन, पालक, मेथी, धनियाँ : लहसुन की खुदाई करें। तीन दिन तक खेत में ही रहने दें। बाद में छाया में सुखाने की व्यवस्था करें तथा भण्डारण करें।

भिण्डी, लोबिया, राजमा : तैयार फलियों को तोड़कर विपणन की व्यवस्था करें। यदि फसलें बीज वाली हैं तो तैयार फलियों को तोड़कर सुखायें व बीज निकालें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा बीमारी से बचाव के लिये संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

टमाटर व बैंगन, शिमला मिर्च : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। घाटी में तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। झुलसा बीमारी के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : बाग की सिंचाई करें। आन्तरिक ऊतकक्षय रोग की रोकथाम के लिए बोरेक्स 0.8 प्रतिशत का छिड़काव करें। छोटी पत्ती रोग के नियंत्रण हेतु जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

लीची : बाग की 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। छोटी पत्ती रोग के नियंत्रण हेतु जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब और नाशपाती : पौधशाला में जमे नए पौधों की सिंचाई करें। बाग में जिंक सल्फेट व बोरेक्स का छिड़काव करें। अधिक फले पेड़ों में फलों की छंटाई 25 प्रति नाली के हिसाब से करें।

आड़ू, खुबानी, आलूबुखारा, बादाम : जिंक सल्फेट और बोरेक्स का छिड़काव करें। बाग की चिड़ियों से रक्षा करें।

मई : मैदानी क्षेत्र–फसल

सूरजमुखी : फसल में दाना पड़ते समय सिंचाई करें। तोते आदि पक्षियों से परिपक्व फसल की सुरक्षा करें। फसल में बिहार बालदार सूँड़ी तथा जैसिड्स का प्रकोप होने पर संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

धान : मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के अन्तिम सप्ताह में डाल दें। फसल से अच्छा उत्पादन लेने हेतु उन्नत प्रजातियों का चयन व संस्तुत सस्य क्रियायें अपनायें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ, जौ, सरसों, चना, मटर एवं मसूर : इन फसलों की समय पर कटाई कर लें एवं सूखने पर गहाई कर उपज को अच्छी तरह भण्डारित कर लें।

झंगोरा (मादिरा/साँवा) : अधिक उत्पादन लेने हेतु उन्नतशील प्रजातियों का चयन करें, जिनकी बुवाई ऊँचाई वाले क्षेत्रों में माह के प्रथम पखवाड़े तथा मध्यम व कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में करें।

धान : मध्यम ऊँचे क्षेत्रों में सिंचित दशा (तलाऊँ) में रोपाई हेतु धान की नर्सरी माह के प्रथम पखवाड़े एवं घाटियों व कम ऊँचे क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में रखें।

मई : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

फूल गोभी, पात गोभी, गांठ गोभी, मूली, गाजर व शलजम : बीज वाली फसलों के कटाई का काम पूरा करें। बीज की सफाई करें और इतना सुखाये की नमी 8 प्रतिशत से ज्यादा न हो।

प्याज : यदि आवश्यक हो तो एक हल्की सी सिंचाई करें। आखिरी सप्ताह में पत्तियों को जमीन की सतह से झुका दे इससे गांठे सख्त हो जाती है।

लहसुन : अतिशीघ्र खुदाई करें। दो दिन तक खेत में सूखने दें बाद में छोटे–छोटे बण्डल बनाकर नमी रहित स्थान पर 10 दिन तक सुखायें तथा भण्डारण करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा रोग के लक्षण दिखें तो संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। फसल कमजोर दिखाई दे तो 50 कि.ग्रा./है. यूरिया खड़ी फसल में डालें।

टमाटर व बैंगन : तैयार फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

मई : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : नए बाग लगाने के लिये रेखांकन करके गड्ढे खोदें व बोरेक्स का छिड़काव करें।

केला : सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई करें। अंवाछित पत्तियों को निकालें, नये बाग लगाने के लिए गड्ढ़े खोदे।

नीबूवर्गीय फल : नये बाग लगाने के लिए रेखांकन करके गडढ़े खोद लें। बाग में 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब : जिन स्थानों पर सिंचाई की सुविधा हो, उन बागों की सिंचाई करें। पत्ती खाने वाले कीट के नियंत्रण हेतु रसायन का छिड़काव करें।

आड़ू व खुबानी : फलों की चिड़ियाँ व अन्य जंगली जानवरों से रक्षा करें। अगेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

जून : मैदानी क्षेत्र–फसल

धान : मध्यम शीघ्र एवं शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह

के प्रथम पखवाड़े एवं सुगन्धित धान की दूसरे पखवाड़े में डालें। उचित सस्य क्रियायें अपनाकर स्वस्थ नर्सरी तैयार करें एवं पौध 21–25 दिन की होने पर रोपाई कर लें।

मक्का : फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में कर लें। बुवाई हेतु उपयुक्त संकर/संकुल प्रजातियों का चयन, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई की विधि, उर्वरकों व खरपतवारनाशी रसायन का प्रयोग तथा अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति के अनुसार करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

मंडुवा, काकुन (कौणी) व रामदाना (चुआ/चौलाई/मारसा) : मध्यम एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में इन फसलों की बुवाई प्रथम पखवाड़े में करें। अधिक उत्पादन हेतु संस्तुत प्रजातियों का प्रयोग करें। गत माह में बोयी गयी फसलों में विरलीकरण, निराई–गुड़ाई, खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग एवं वर्षा के पश्चात् नत्रजन की टॉप–ड्रेसिंग संस्तुति अनुसार करें।

सोयाबीन : मध्यम एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें।

धान : जेठी धान की बुवाई प्रथम सप्ताह तक कर लें। प्रजाति का चुनाव, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई, उर्वरकों का प्रयोग व अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति अनुसार करें।

जून : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

बैंगन : फसल से तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बीज वाली फसल से बीज निकालें। जुलाई–अगस्त में रोपाई हेतु पौधशाला में बीज 1000–1200 ग्राम/है. की दर से डालें।

भिण्डी, लोबिया तथा राजमा : भिण्डी के तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। मई माह में बुवाई की गयी भिण्डी, लोबिया व राजमा में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

मिर्च : आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करें। पकी हुई मिर्च को तोड़कर सुखायें तथा बीज निकालें। वर्शा ऋतु की फसल के लिए 1000–1500 ग्राम बीज/है. की दर से पौधशाला तैयार करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करें। झुलसा के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। फसल में 50 किलोग्राम यूरिया/है. डालें।

टमाटर, बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च, फ्रासबीन, भिण्डी, लोबिया : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। कीट रोग दिखते ही संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

जून : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : बाग की सफाई करें। नए बाग लगाने के लिए गड्ढ़ों की भराई का कार्य पूर्ण करें। मध्यम समय में परिपक्व होने वाली किस्मों को तोड़कर बाजार भेजें। पौधशाला में कलम बांधे एवं इसके लिए चीरा अथवा स्फान कलम विधि का प्रयोग करें।

नीबूवर्गीय फल : नए बाग लगाने के लिए गड्ढ़ों की भराई करें। जल निकास की नालियों की सफाई करें। फलदार पेड़ों में नत्रजन व पोटाश की दूसरी मात्रा का प्रयोग करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब, नाशपाती, आड़ू, आलूबुखारा, खुबानी : बाग में जल निकास की व्यवस्था करें। बाग में जल निकास की नालियाँ बना लें। तैयार फलों की समय पर तुड़ाई कर विपणन करें।

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

विश्वविद्यालय द्वारा 113वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन फरवरी 25–28, 2023 को किया गया। मेले के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि मा. कृषि मंत्री उत्तराखण्ड, श्री गणेश जोशी ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि हरित क्रांति की जननी यह विश्वविद्यालय समय की आवश्यकता के अनुरूप अनेक अनुसंधान की है, जिससे कृषकों को काफी लाभ हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि पहले मंडुवा, मादिरा, कोदो, झिंगोरा आदि को गरीबों का भोजन कहा जाता था। परन्तु आज यह सिद्ध हो चुका है कि इनके सेवन से मधुमेह, रक्तचाप जैसे खतरनाक रोगों से बचा जा सकता है। कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने कहा कि विश्वविद्यालय अब तक 330 फसलों की प्रजातियों का विकास, बावन हजार विद्यार्थी उपाधि प्राप्त कर चुके हैं और लगभग 1.50 करोड़ कृषकों को विभिन्न तकनीक मुहैया कराया है। उन्होनें कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 के अवसर पर विविध कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगें। कार्यक्रम के प्रारम्भ में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. अनिल कुमार शर्मा ने बताया कि मेले में महत्वपूर्ण संस्थानों व कम्पनियों द्वारा विभिन्न विधाओं पर 350 से अधिक स्टॉल लगा कर बीज, कृषि ऋण, कृषि सुरक्षा, कृषि निवेश आदि की जानकारी प्रदान की जा रही है। मेले में अनुसंधान केन्द्रों द्वारा नवीनतम प्रजातियों के बीज व पौधों की बिक्री, शाक–भाजी की प्रदर्शनी, आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी, संकर बछियों की नीलामी, कृषि गोष्ठी आदि का आयोजन निर्धारित है।

मेले का उद्घाटन करते मा. कृषि मंत्री श्री गणेश जोशी

अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम

वर्तमान कृषि के परिस्थिति यथा जलवायु परिवर्तन, तापक्रम में उतार–चढ़ाव, असमय अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि को दृष्टिगत रखते हुए मोटे अनाजों की खेती एवं इनका मूल्यवर्धन किसानों के लिए लाभारी साबित हो सकता है। भारत सरकार ने इनके महत्व, उत्पादन तकनीक, मानव भोजन में इनका प्रयोग, जन– जागरूकता एवं प्रचार–प्रसार हेतु संयुक्त राष्ट्र से वर्ष 2023 को अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष घोषित करने का अनुरोध किया था। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इसे स्वीकारते हुए वर्ष 2023 को पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष के रूप में मनाये जाने का निर्णय लिया है। विश्वविद्यालय द्वारा भी मुख्य परिसर, शोध एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से पूरे वर्ष अनेक प्रसार कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- रेखीय विभाग द्वारा आयोजित कृषक वैज्ञानिक संवाद के अन्तर्गत वैज्ञानिकों द्वारा 16 कार्यक्रमों में प्रतिभाग कर

समसामायिक कृषि कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी गयी। इसी क्रम में, तीन किसान गोष्ठियों में व्याख्यान देकर 348 कृषकों को लाभान्वित किये।

- केन्द्र द्वारा कुल 13 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 247 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं अनुकरणीय परीक्षण के अन्तर्गत 45.0 है. क्षेत्रफल पर 195 प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है।
- प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत दो जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें कृषकों को प्राकृतिक खेती के लाभ व उपयोगिता के बारे मे विस्तृत चर्चा की गयी। इस कार्यक्रम में चयनित ग्रामों के 200 कृषको द्वारा प्रतिभाग किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट मिशन जनपदीय कार्यशाला, 2023

- अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष, 2023 मिलेट मिशन के अन्तर्गत कृषि विभाग अल्मोड़ा के सौजन्य से कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कृषकों को मिलेट के दैनिक जीवन में उपयोगिता एवं इनके अधिक से अधिक उत्पादन के लिए जागरूक किया गया।
- मार्च 27, 2023 को विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा आयोजित किसान मेले में केन्द्र द्वारा स्टाल लगाया गया, जिसमें कद्दूवर्गीय, फूलगोभी, पत्तागोभी, बैगन, टमाटर, शिमला मिर्च, हरी मिर्च आदि पौध की बिक्री की गयी। मेले के मुख्य अतिथि डा. आर.एस. परौदा, पूर्व महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा केन्द्र के स्टाल का भ्रमण किया गया तथा केन्द्र द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की प्रशंसा की गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- केन्द्र द्वारा कृषि गत कुल 10 प्रशिक्षणों का आयोजन कर 221 कृषकों को प्रशिक्षित किया गया। प्राकृतिक खेती योजना के अन्तर्गत कृषको हेतु विभिन्न ग्रामों में जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं प्रदर्शनो का आयोजन किया गया। इस परियोजना के अन्तर्गत गेहूँ, मैरो कद्दू एवं गेहूँ की फसल में यलो रस्ट का प्रबन्ध पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनो का आयोजन किया गया। गृह विज्ञान प्रक्षेत्र परीक्षण के अन्तर्गत दो परीक्षण क्रमशः Drudgery reduction of farm women by use of light weight plastic fibre solta तथा Nutrient dense food supplements for under nourished female का आयोजन किया गया। पादप सुरक्षा के अन्तर्गत Assessment of bio agent and insecticide for the management of white grub in Potato विषयक परीक्षण आयोजित किया गया।

प्राकृतिक खेती परियोजना के अन्तर्गत कार्यक्रम

- शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न विद्यालयी छात्र समूहों द्वारा प्रदर्शन इकाईयों का भ्रमण, तकनीकी जानकारी एवं उनकी कृषि सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समाधान किया।
- फरवरी 27, 2023 को मा. प्रधानमंत्री द्वारा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि कार्यक्रम के अन्तर्गत विडियो कांफ्रेसिंग द्वारा सीधा संवाद किया गया। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण केन्द्र पर किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- केन्द्र द्वारा युवाओं हेतु 12 प्रशिक्षण एवं बेरोजगार नवयुवकों हेतु तीन रोजगारपरक प्रशिक्षण आयोजित कर कुल 300 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- अन्तर्राष्ट्रीय मिलेटस वर्ष 2023 के अन्तर्गत दो कार्यक्रम आयोजित हुए, जिसमें 148 कृषकों ने प्रतिभाग किया। फरवरी 27, 2023 को केन्द्र पर पी.एम. सम्मान निधि जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 65 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र द्वारा आठ हजार से भी अधिक सब्जी पौध जैसे टमाटर, पत्तागोभी, करेला, कद्दू आदि की किसानों को बिक्री की गयी।
- विभिन्न विद्यालयों के छात्र–छात्राओं एवं शिक्षक / शिक्षिकाओं द्वारा केन्द्र में शैक्षिक भ्रमण कर कृषि की विभिन्न विधाओं की प्रयोगात्मक अध्ययन एवं जानकारी ली गयी।
- डा. अनिल कुमार शर्मा, निदेशक प्रसार शिक्षा की अध्यक्षता में दो पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में निःशुल्क मिनरल मिक्सचर, परजीवी नियंत्रण हेतु दवाईयॉ वितरित की गयी।

पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के अन्तर्गत गेंहूँ डी.बी.डब्ल्यू. 222 एवं 187 (अधिक उपज एवं रतुवा रोग के प्रति सहनशील) के 30 प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है। कलस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में तिलहनी फसल तोरिया (पी.टी. 508) एवं संकर सरसों (पी. 5222 एवं 45 एस. 46) के 10–10 है. क्षेत्रफल में प्रदर्शन आयोजित किया गया। दलहन प्रदर्शनों के अन्तर्गत मसूर (पन्त मसूर 9) के 36 प्रदर्शन संचालित हुए हैं। पशुपालन प्रदर्शनों में पशुओं के जनन एवं उत्पादन क्षमता वृद्धि हेतु 30 एवं बकरियों के श्वसन सम्बन्धी समस्या के निदान हेतु 40 प्रदर्शन लगाये गये हैं। गेंहूँ एवं गन्ने में खरपतवार नियंत्रण हेतु प्रभावी उपचार का मूल्यांकन प्रक्षेत्र परीक्षण के द्वारा संचालित किया जा रहा है।
- केन्द्र द्वारा फसल उत्पादन के 08, पशुपालन के 11 एवं गृह विज्ञान के 02 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया। ग्रामीण युवाओं द्वारा स्वरोजगार सृजन हेतु कुक्कुट पालन पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन जनवरी, 2023 में किया गया। जनवरी में गौ सेवा आयोग की बैठक तथा यूकास्ट द्वारा आयोजित रूरल साइंस कांग्रेस में केन्द्र द्वारा स्टॉल लगाया गया।

- प्राकृतिक खेती परियोजना के अन्तर्गत मार्च 20, 2023 को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर कृषकों को प्राकृतिक खेती अपनाने, पर्यावरण तथा मिट्टी के स्वास्थ्य को बचाने सम्बन्धी विस्तृत जानकारी दी गई। ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों हेतु मार्च 24, 2023 को केन्द्र पर ''वैज्ञानिक विद्यार्थी संवाद'' का आयोजन किया गया। कृषकों हेतु गौ आधारित प्राकृतिक खेती के विषय पर मार्च 27–28, 2023 को प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें बीजामृत, जीवामृत, घन जीवामृत, पौध सुरक्षा व आच्छादन आदि की जानकारी दी गई।

मा. कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा केन्द्र पर भ्रमण

- एफ.पी.ओ. परियोजना के अन्तर्गत कुल 12 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 674 किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया। मार्च 13, 2023 को न्यूट्री स्मार्ट विलेज शंकरपुर में न्यूट्री गार्डन के अन्तर्गत ''किसान दिवस'' मनाया गया।
- अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष के अवसर पर सूक्ष्म पोषक तत्व, कुपोषण की रोकथाम व स्थानीय मिलेट्स को प्रोत्साहन देने हेतु केन्द्र पर दिनांक जनवरी 17, 2023 को गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसी क्रम में जिलाधिकारी महोदया देहरादून की उपस्थिति में पुनः मार्च 02, 2023 को कृषि विभाग द्वारा आयोजित किसान गोष्ठी में भाग लेकर वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी जानकारी दी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा 15 है. क्षेत्रफल पर कृषि एवं पशुपालन सम्बन्धी आठ ऑन फॉर्म ट्रायल व दलहन में मसूर तथा तिलहन में सरसों पर उन्नतशील प्रजातियों के प्रदर्शन आयोजित किए गए। गेहूं मे नाशी जीव प्रबन्धन व संतुलित उर्वरक उपयोग, पोषण वाटिका, द्विउद्देशीय कुक्कुट पालन, दुधारू पशुओं हेतु खनिज मिश्रण पर कुल 40 है. क्षेत्रफल में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किए गए।
- केन्द्र द्वारा विभिन्न विषयों पर 18 प्रशिक्षण, प्राकृतिक खेती विषय पर पाँच जागरूकता कार्यक्रम, कौशल विकास से कृषि विकास योजनान्तर्गत बेरोजगार युवाओं के लिये "घर के पिछवाड़े मुर्गी पालन" विषय पर एक 25 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त भिण्ड, मध्य प्रदेश के किसानो के लिये पाँच दिवसीय वित्त पोषित प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

फोल्डर का विमोचन करते हुए मा. कुलपति जी

- वैज्ञानिकों द्वारा इस अवधि में 31 व्याख्यान, 10 वेबिनार, 03 प्रक्षेत्र दिवस, 10 किसान गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया। केन्द्र पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्त पोषित परियोजना प्राकृतिक खेती का संचालन हो रहा है। राजभवन में आयोजित "बसन्तोत्सव कार्यक्रम" मार्च 03–05, 2023 में प्रतिभाग किया गया। केन्द्र पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के वित्त सचिव, श्री जी.डी. शर्मा तथा तथा गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर के कुलपति जी डा. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा भ्रमण कर विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन कर मार्गदर्शन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत अंगीकृत ग्रामों में गेहूँ 05 है., चना 15 है. एवं मसूर के 16 है. क्षेत्रफल में प्रदर्शन का आयोजन किया गया।
- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह मार्च 08, 2023 के अवसर पर महिलाओं को आहार में मोटे अनाज की महत्ता पर जागरूक किया गया। कृषकों हेतु ऊर्जा संरक्षण एवं कृषि कार्यों में उपयोग हेतु एक दिवसीय क्षमता विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राकृतिक कृषि जागरूकता एवं प्रर्दशन कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। आर्या परियोजना के अन्र्तगत बेरोजगार शिक्षित युवाओं के आयोपार्जन हेतु मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, मुर्गीपालन एवं शोभाकारी मोमबत्ती विषयों पर 08 प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा 160 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन

- अन्तर्राष्ट्रीय मोटे अनाज वर्ष (श्री अन्न)–2023 के अन्तर्गत कृषकों को भोजन में मोटे अनाज के प्रयोग के तरीके, लाभ तथा पोषण गुणवत्ता के बारे में जानकारी दी गयी। महिलाओं के लिए मोटे अनाज के प्रयोग विधि पर प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- केन्द्र के प्रक्षेत्र पर बीज उत्पादन हेतु भिण्डी, किनोवा एवं राजमा की बुवाई की गई। बकरी की सिरोही प्रजाति का शीत जलवायु में वृद्धि दर आंकलन हेतु केन्द्र पर प्रदर्शन ईकाई स्थापित की गई है।
- केन्द्र के प्रक्षेत्र पर उत्पादित फल, सब्जी, बीज एवं पौध की बिक्री एवं प्रशिक्षण शुल्क द्वारा प्राप्त आय केन्द्र के चक्रीय निधि में जमा की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा 13 प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न किए गये, जिसमें कुल 285 कृषक प्रतिभाग किये। इसी क्रम में केन्द्र द्वारा ग्रामीण युवाओं हेतु दो रोजगारपरक प्रशिक्षण व प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु तीन प्रशिक्षण आयोजित किये गये।
- वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण एवं केन्द्र पर संचालित गतिविधियो की जानकारी प्राप्त करने हेतु अनेक किसानों द्वारा भ्रमण किया गया। दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण द्वारा उन्नत कृषि तकनीक

सम्बन्धी हेतु 16 समाचार प्रकाशित किये गये।

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ, सरसों, अरहर, मसूर, सब्जी मटर, ब्रौकली, शिमला मिर्च, फ्रांसबीन, टमाटर व मधुमक्खी संबंधी प्रदर्शन में लगाये गये है। केन्द्र के प्रक्षेत्र से कीवी के पौधे कृषकों/स्थानीय नागरिकों को विक्रय किये गये।
- प्राकृतिक खेती योजनान्तर्गत जिले में किसानों को प्राकृतिक खेती के विस्तार पर जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमे कुल 619 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- श्री आशीष भटगांई एवं श्री बी.एल. फिरमाल, निदेशक प्रशासन एवं अनुश्रवण (गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर) द्वारा क्रमशः फरवरी 09, 2023 एवं मार्च 14, 2023 को कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण कर केन्द्र पर स्थापित संग्रहालय, मशरूम इकाई, कीवी पौधशाला, स्वचालित मौसम इकाई व पॉली हाउस का अवलोकन एवं जरूरी सलाह दिया गया।

निदेशक, प्रशासन एवं अनुश्रवण द्वारा मौसम इकाई का भ्रमण

- दक्षता कौशल विकास प्रशिक्षण के अन्तर्गत 25 मधुमक्खी पालकों हेतु 27 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मार्च 02–29, 2023 तक आयोजित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रुद्रप्रयाग)

- केन्द्र में कुक्कुट पालन इकाई की स्थापना कर उन्नत प्रजातियाँ (क्रायलर, सतपुड़ा एवं कड़कनाथ) पाली जा रही है।
- सोलन, हिमांचल प्रदेश से शीतोष्ण फलों की विभिन्न प्रजातियों के 300 पौधों का क्रय किया गया। इन पौधों से सेब, प्लम, आड़ू, नाशपाती, अखरोट, पर्सीमोन एवं चैरी का मातृ प्रखण्ड तैयार किया गया है। इसी क्रम में चुलू (Wild apricot), अखरोट एवं कीवी की नर्सरी भी लगायी गयी है।
- केन्द्र के प्रक्षेत्र पर पॉलीहाउस में टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च, खीरे की नर्सरी एवं फ्रैंचबीन की बीजाई की गई है।
- पंतनगर विश्वविद्यालय में किसान मेला फरवरी 25–28, 2023 में केन्द्र के तकनीकी सहयोग से बने मंडुवे के बिस्किट, पहाड़ी अनाज के बीज इत्यादि को प्रदर्शनी में रखा गया।
- पूसा किसान मेला, नई दिल्ली मार्च 03–05, 2023 में केन्द्र की सम्पर्क कृषक कु. बबीता रावत को राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट कृषक के रूप में सम्मानित किया गया।

पूसा किसान मेला में जनपद की प्रगतिशील कृषक सम्मानित

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा गेहूँ, तोरिया, मसूर, चना, टमाटर, मूल्यवर्धन एवं बैकयार्ड पोल्ट्री सम्बन्धित कुल 13 प्रदर्शन 52 है. क्षेत्रफल में आयोजित हुए हैं। ऑनफार्म ट्रायल के अन्तर्गत गेहूँ, प्याज, गैंदा, आम, गन्ना, मक्का, मत्स्य, गाय, मूल्यवर्धन एवं पोषण पर कुल 12 परीक्षण संचालित हुए हैं।
- केन्द्र द्वारा कृषकों हेतु 13 प्रशिक्षण एवं स्किल कॉउसिंल ऑफ इण्डिया द्वारा वित्त पोषित कौशल विकास प्रशिक्षण के अन्तर्गत बागवानी विषय पर मार्च 04–29, 2023 तक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रक्षेत्र पर लगभग गेहूँ पर 10 है. एवं लाही 02 है. क्षेत्रफल, सब्जियाँ यथा लौकी, खीरा, कद्दू की बुवाई, नये बगीचे की स्थापना एवं प्रबन्धन एवं सरसों की कटाई जैसे कार्यक्रम संचालित हुए हैं।
- अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 के अवसर पर केन्द्र द्वारा दो कार्यक्रम आयोजित कर कृषकों को भोजन में मिलेट्स का महत्व, इनके स्वास्थ्यवर्धक गुण इत्यादि के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला गया। केन्द्र द्वारा चार कृषि गोष्ठी का आयोजन कर कृषकों को कृषि सम्बन्धी नवीनतम तकनीकी जानकारी साझा की गई। केन्द्र द्वारा एक पशुचिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया।
- केन्द्र द्वारा डिप्लोमा कोर्स– डेसी के नये बैच का प्रारम्भ किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन जनवरी 25, 2023 के अवसर पर डा. मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति एवं डा. अनिल कुमार शर्मा, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा भाग लेकर वितरकों को इस कोर्स के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

डेसी के नये बैच का उद्घाटन करते हुए मा. कुलपति जी

- निरन्तर तापमान में उतार–चढ़ाव, अत्यधिक वर्षा आदि से सम्बधित विभिन्न सलाहकार सेवाओं का आयोजन किया गया। इस सम्बन्ध में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा बढ़ते तापमान से बचाने के लिए गेहूँ पर करें दवा का छिड़काव, गेहूँ का उत्पादन गिरने की आशंका, कम पानी में तैयार पीली सरसों लाएगी बहार आदि विषयों पर आलेख प्रकाशित किया गया, जिससे अनेक कृषक लाभान्वित हुए।

मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम

महाविद्यालय द्वारा पिथौरागढ़ एवं देहरादून के कृषकों हेतु पांच दिवसीय दो प्रशिक्षण 'मत्स्य पालन की उन्नत तकनीकें, मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण' आयोजित कर कुल 99 कृषकों को लाभान्वित किया गया। इसी क्रम में, बिहार के गोपालगंज एवं वैशाली जिले के कृषकों हेतु 10 दिवसीय दो प्रशिक्षण 'मत्स्य पालन, बीज उत्पादन एवं प्रसंस्करण' आयोजित कर 53 कृषकों को लाभान्वित किया गया।

TREAT (Translating Research for Eco-Agriculture Transformation) यूनिट

कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (समेटी) के परिसर में लगभग एक एकड़ क्षेत्रफल जो तीन वर्ष पूर्व परती भूमि थी, को रसायन मुक्त खेती, कृषकों के क्षमता विकास एवं कृषि शिक्षा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु TREAT यूनिट की स्थापना की गई है। इस यूनिट में अनेक पर्यावरण अनुकूल कृषि मॉडल इकाई स्थापित

किये गये। यूनिट का उद्देश्य समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल प्रदर्शन, रसायन मुक्त सुरक्षित व पौष्टिक उत्पाद, ताजी सब्जियां, मृदा स्वास्थ्य में सतत् सुधार एवं कृषक स्तर पर कम समय–कम जगह से अधिकतम लाभ अर्जित करने सम्बन्धी तकनीक प्रदर्शित करना है।

यूनिट के अन्तर्गत संरक्षित खेती का मॉडल, टमाटर, बैंगन, मिर्च, भिण्डी, कद्दूवर्गीय, प्याज व गोभीवर्गीय सब्जियों के पौध, शकरकंद, मत्स्य पालन, बकरी पालन व मुर्गी पालन इत्यादि समन्वित खेती के रूप में प्रदर्शित किये जा रहे हैं। भूमि के समुचित उपयोग तथा नियमित आय अर्जन हेतु फल पौधों में रंगीन आम, नाशपाती, आलूबुखारा, अंजीर, शरीफा, कमरख, जामुन, नीबू, करौंदा, केला, फालसा, पपीता, सहजन, बेल, बेर इत्यादि का रोपण किया गया है।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा इस अवधि में कुल 05 प्रशिक्षण क्रमशः कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार क्रांति का उपयोग, व्यावसायिक मशरूम उत्पादन, संरक्षित सब्जी उत्पादन, बाजार आधारित प्रसार एवं पौधशाला प्रबन्धन सम्बन्धी प्रशिक्षण आयोजित कराये गये। इन कार्यक्रमों में कुल 94 मशरूम उत्पादक, उद्यान निरीक्षक, फार्म स्कूल संचालक, नर्सरी पालक, विभागीय अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक प्रतिभाग किये।

प्रमाण–पत्र वितरित करते हुए निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा कुल 15 प्रायोजित प्रशिक्षण एवं 22 भ्रमण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिससे क्रमशः 583 एवं 1750 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय पशुपालन प्रबन्धन, कृषि विविधीकरण, जैविक खेती एवं प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा स्वरोजगार हेतु बकरी पालन इत्यादि से सम्बन्धित थे।

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) की गतिविधियाँ

भ्रमण पर आये 629 कृषकों/आगन्तुकों को एकल खिड़की वितरण प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों की जानकारी एवं फसलों व सब्जियों के बीज, साहित्य उपलब्ध कराये गये। कृषकों एवं अन्य हितधारकों को ₹ 38,765.00 के विभिन्न विषयों के 851 कृषि साहित्य/पुस्तक एवं ₹ 1,61,502.00 के खरीफ फसल व सब्जियों के कुल 10.06 कुन्तल बीज उपलब्ध कराये गये। पॉलीबैग में विभिन्न कद्दूवर्गीय सब्जियों (करेला, तोरई, लौकी, खीरा एवं कद्दू) के 598 पौधें भी कृषकों को उपलब्ध कराकर ₹ 5,980.00 की धनराशि अर्जित की गयी। कृषक हैल्पलाईन/कॉल सेन्टर 05944–234810 एवं 05944–235580 के माध्यम से किसानों एवं अन्य हितधारकों द्वारा पूछे गये कुल 247 समस्याओं/जिज्ञासाओं का समाधान वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। इन गतिविधियों का संचालन डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं प्रभारी अधिकारी एटिक के दिशा–निर्देशन में किया गया।

सफलता की कहानी : स्वरोजगार से सुखद यात्रा

श्री जगमोहन सिंह राणा पुत्र श्री भरत सिंह राणा, ग्राम–हिमरोल, पो0–कफनोल, विकास खण्ड–नौगांव, जनपद–उत्तरकाशी के निवासी हैं। आपने परास्नातक की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् स्वरोजगार की राह चुना। चूंकि, आपके पिताजी पहले से ही आधुनिक खेती कर रहे थे, तो आपको ज्यादा मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ा। प्रारम्भ में आपने पिताजी के साथ अपनी चकबन्दी वाली जमीन पर सिंचाई सुविधा तैयार कर इन पर सेब के बगीचे के साथ–साथ खुमानी, पुलम, चुल्लू, नाशपाती, आड़ू, अंगूर आदि के पौधे लगाये। बाद में लगा कि यह फसल जल्दी फल नहीं देते हैं तो सेब के अल्ट्रा हाईडेंसिटी रूट स्टॉक तथा अल्ट्रा हाईडेंसिटी सीडलिंग के 1500 पौधे लगायें, जिसमें रूट स्टॉक वाले एक वर्ष में तथा सीडलिंग वाले तीन वर्ष में फल दे देते हैं। आप तुलसी, लेमनग्रास, तेजपत्ता, गुलाब, रोजमेरी, कैमामाईल आदि से हर्बल चाय तैयार कर स्थानीय बाजार में व ऑनलाईन प्लेटफार्म पर बिक्री करते हैं। आप सी ग्रेड के फल एवं सब्जी का मूल्यवर्धन कर मुख्यतः बुरांश व खुमानी का जूस, सेब की चटनी एवं अचार, चुल्लू का तेल आदि का विपणन करते हैं। विभिन्न पर्वतीय उत्पाद जैसे लाल चावल, मंडुवे का आटा, पहाड़ी दालें, मशरूम उत्पादन, मशरूम अचार, ड्राई मशरूम, मशरूम पाउडर, मशरूम बड़ियां का भी विपणन करते हैं। आपके सभी उत्पाद ''यमुना वैली'' ब्राण्ड के नाम से बाजार में विक्रय होता हैं। इन उद्यमों से आपकी सालाना आय लगभग ₹ 5.7 लाख हो जाती है। आपके इस उद्यम में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में लगभग 1500 से 2000 कृषक जुड़े हैं। उत्तम कृषि उद्यम अपनाने तथा युवाओं को स्वरोजगार की राह दिखाने हेतु राज्य एवं केन्द्र सरकार से आपको अनेक सम्मान भी मिल चुके हैं। आपका युवाओं के लिए एक संदेश है कि कोई भी काम कठिन नहीं है। बस दृढ़ निश्चय के साथ काम करने पर अवश्य सफलता मिलती है।

शिखर

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ लगभग 65 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है और इनमें से अधिकांश कृषि पर निर्भर हैं। सदियों से कृषि एवं पशुपालन एक–दूसरे के पूरक माने जाते रहे हैं। वर्तमान में पशुपालन, कुक्कुट पालन, बकरी पालन आदि ऐसे उद्यम हैं, जिनसे कृषकों की आय में त्वरित वृद्धि की जा सकती है। हमारे संस्थान द्वारा भी समय–समय पर कृषकों को पशुपालन सम्बन्धी प्रशिक्षण, तकनीकी जानकारी, परामर्श प्रदान की जाती है, जिसे अपनाकर कृषक स्वरोजगार की राह पर चल सकते हैं। वर्तमान परिस्थिति में यह अति आवश्यक हो गया है कि लघु तथा सीमान्त कृषक फसलों की उत्पादकता बढ़ाने हेतु नवीन तकनीकों को अपनाएं तथा उत्पादन लागत कम करें। वैज्ञानिक पशुपालन, प्रबन्धन तथा पशुरोगों एवं उनसे बचाव पर उपलब्ध इस सहज ज्ञान साहित्य के माध्यम से पशुपालक एवं कृषक अपने पशुओं का वैज्ञानिक विधि से पशु उत्पादन एवं प्रबन्धन करके न केवल अपने लिए अधिक आय अर्जित कर सकते हैं, अपितु समय रहते अपने स्तर से पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा के लिए उन्हें समय पर टीके लगवाने, कृमिनाशक देने एवं उनकी वैज्ञानिक विधि से देखभाल कर सकने में एक स्तर तक स्वयं सक्षम हो सकते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्रों का दायित्व है कि ये उन युवाओं को सशक्त बनाने में मदद करें जो कृषि एवं कृषि आधारित व्यवसाय से जुड़ना चाहते हैं। हर्ष का विषय है कि गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका ''पंत प्रसार संदेश'' का प्रकाशन किया जाता है, जिसमें अनेक उन्नत कृषि सम्बन्धी जानकारी संकलित होती है। विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों हेतु मार्गदर्शक की भूमिका निभायेगी।

(डा. त्रिवेणी दत्त)
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर (उत्तर प्रदेश)

हरित क्रान्ति के फलस्वरूप भारतवर्ष में कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिसके परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में दोगुनी से अधिक वृद्धि हुई और देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हुआ है। यद्यपि, सीमान्त और लघु कृषकों को इसका लाभ अपेक्षाकृत कम हुआ है। अतः यह आवश्यक है कि इन कृषकों की आवश्यकतानुसार कृषि तकनीकें विकसित की जाएं। इसी के दृष्टिगत कृषि जनित सभी व्यवसायों में कुशल प्रबन्धन, समन्वित फसल प्रणाली, जैविक खेती तथा उन्नत बीजों एवं तकनीकों के समेकित प्रयोग पर बल दिया गया है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में, जहाँ एक ओर जोत बिखरी एवं कृषि वर्षाश्रित है, वहीं दूसरी ओर यहाँ उन्नत कृषि तकनीकों का अभाव भी है। अतः यहाँ के कृषकों को आत्मनिर्भर बनाना अत्यधिक चुनौतीपूर्ण कार्य है। यह सर्वविदित है कि गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय एवं अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों के अथक प्रयास द्वारा कृषकों की आजीविका में सुधार लाने हेतु सतत् प्रयत्नशील है, जो कि अत्यन्त सराहनीय है।

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष है कि विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषकोपयोगी त्रैमासिक पत्रिका ''पंत प्रसार संदेश'' का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका जहाँ एक ओर कृषि कार्य संचालन में प्रभावी भूमिका निभायेगी, वहीं दूसरी ओर कृषकों की आजीविका वृद्धि में भी सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका के आगामी अंक जनवरी–मार्च, 2023 के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डा. सुनील कुमार)
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

निदेशक की कलम से

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में अधिकांश कृषक आज भी पारम्परिक रूप से खेती करते हैं, वे आधुनिक कृषि से प्रायः अछूते हैं। इसका कारण किसानों की छोटी व बिखरी जोत, सिंचाई हेतु पानी का अभाव, अन्य संसाधनों की सीमित मात्रा में उपलब्धता एवं विकसित कृषि तकनीक का हस्तान्तरण न होना है। कृषकों तक उन्नत तकनीकी पहुँचाने में विभिन्न रेखीय विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा स्वयं सेवी संस्थाओं का अहम योगदान है। यदि कृषकों को उनके क्षेत्र व परिस्थितियों के अनुरूप कम लागत की तकनीक उपलब्ध हो जाये तो उसका प्रयोग कर वे अपनी पैदावार में बढोत्तरी कर आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकते हैं तथा इससे पलायन रोकने में भी मदद मिलेगी। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषकों के खेतों में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं प्रक्षेत्र परीक्षणों के आयोजन के साथ–साथ विभिन्न प्रसार गतिविधियों का संचालन किया जाता है जिनकी जानकारी इस निदेशालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका पंत प्रसार संदेश के माध्यम से कृषकों एवं अन्य हितधारकों तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रम जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मोटे अनाज वर्ष–2023 एवं प्राकृतिक खेती जैसे ज्वलन्त विषयों को भी इन केन्द्रों के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों, रेखीय विभागों के अधिकारियों व प्रसार कार्यकर्ताओं एवं अन्य हितधारकों के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाएगी। इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए लेखकों द्वारा किये गये अथक प्रयास हेतु मैं उन्हें बधाई देता हूँ।

अनिल कुमार शर्मा
निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

आभार

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से अब तक देश में खाद्यान्न उत्पादन में कई गुना बढ़ोत्तरी हुई है, जिसमें किसानों, नीति नियंताओं व कृषि वैज्ञानिकों का अहम योगदान रहा है। किन्तु खेती में यह तरक्की सिंचित क्षेत्रों में एवं बड़े कृषकों तक ही सीमित रही है। देश के अधिकांश सीमांत व लघु कृषक आज भी इस विकास से अछूते हैं, जिसके अनेक कारण जैसे कृषकों में तकनीकी जानकारी व जागरूकता का अभाव, परम्परागत खेती, महंगे कृषि निवेश, समुचित बाजार व्यवस्था का अभाव आदि प्रमुख हैं। इसके विपरीत अनेक ऐसे भी कृषक है जो आधुनिक कृषि को व्यवसाय के रूप में अपनाकर अच्छी आय अर्जित करने के साथ–साथ अन्य कृषकों हेतु प्रेरणा स्त्रोत बनकर उभर रहे हैं। वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यकता इस बात की है कि कृषकों एवं बेरोजगार युवाओं को अधिकाधिक संख्या में कृषि एवं कृषि आधारित व्यवसायों हेतु प्रेरित किया जाये। इस कार्य में कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक व रेखीय विभागों के प्रसार कर्मी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ''पंत प्रसार संदेश'' का वर्तमान अंक आपके हाथों में है जिसमें विभिन्न प्रसार गतिविधियों के साथ–साथ आगामी त्रैमास में किये जाने वाले महत्वपूर्ण कृषि कार्यों की जानकारी भी दी गयी है। इस पत्रिका को तैयार करने में डा. अनिल कुमार शर्मा, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा दिये गये मार्गदर्शन एवं परामर्श हेतु हम आभार व्यक्त करते हैं। सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों के सहयोग हेतु भी हम आभारी हैं। पत्रिका को और बेहतर बनाने में आपके सुझाव हमारे लिए महत्वपूर्ण होंगे। आप अपने सुझाव पत्रिका के अन्तिम पेज पर अंकित फोन नं. अथवा ई–मेल आई.डी. पर प्रेषित कर सकते हैं।

धन्यवाद।

बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं
बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड
दूरभाष : 05944–233336, 233811, ई–मेल : direxтedugbp@gmail.com
हेल्प लाइन : 05944–234810, 235580, किसान कॉल सेन्टर: 1800–180–1551
संरक्षक : डॉ० मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति; मुख्य सम्पादक : डॉ० अनिल कुमार शर्मा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं डॉ० बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)